पूर्वी आर्थिक मंच के

उद्घाटन समारोह में

विदेश मंत्री का

सम्बोधन

(06 सितंबर, 2017; व्लादिवोस्तोक, रूस)

महामहिम श्री यूरी ट्रूटनेव, उप–प्रधान मंत्री और रूसी संघ के सुदूरपूर्व क्षेत्र हेतु राष्ट्रपति के विशेष राजदूत;

सम्माननीय मंत्रीगण और प्रतिनिधिगण;

सम्मानित प्रतिभागीगण; एवम्

गणमान्य अतिथिगणः

यह मेरा सौभाग्य है कि व्लादिवोस्तोक में तीसरे पूर्वी आर्थिक मंच के उद्घाटन समारोह में मैं हिस्सा लेने आई हूँ।

मैं भारत सरकार और अपने देशवासियों की ओर से आप सब का हृदय से अभिनंदन करती हूँ।

मित्रों, पूर्वी आर्थिक मंच, तीन वर्ष के थोड़े से समय में, न केवल रूस के सुदूरपूर्व क्षेत्र की आर्थिक ताकत को दर्शाने वाला बल्कि एशिया प्रशांत क्षेत्र तथा विश्व के अन्य हिस्सों से भी नेताओं तथा कारोबारी प्रतिनिधियों को एक साथ लाने वाला एक प्रमुख मंच बन गया है।

इस मंच का तेजी से हो रहा विकास इस बात का प्रमाण है कि रूस के सुदूरपूर्व में निवेश के तथा व्यवसाय के अवसर बढ़े हैं। यह भी सत्य है कि रूस की सरकार इस क्षेत्र में विदेशी निवेश को आकर्षित करने में बहुत सफल रही है। इस इलाके की समृद्ध प्राकृतिक सम्पदा और आर्कटिक तथा प्रशांत सागर दोनों के लिए सुलभ मार्ग उपलब्ध कराने वाली इसकी अनूठी भौगोलिक स्थिति अपार संभावनाओं से भर देती है। यह क्षेत्र समुद्री मार्ग से एशिया प्रशांत के सबसे अधिक जनसंख्या वाले तथा संभावनाओं से भरे क्षेत्रों के बहुत नजदीक है। रूस के औद्योगिक केन्द्र के साथ इस क्षेत्र का संपर्क तेज गति से बढ़ रहा है।

सोवियत काल में जो व्लादिवोस्तोक एक closed city के रूप में जाना जाता था। आज वही व्लादिवोस्तोक इस क्षेत्र में एक उभरता हुआ निवेश और व्यवसाय का केन्द्र बन गया है। 25 वर्ष पूर्व, रूस के सुदूरपूर्व के प्रवेश द्वार के रूप में व्लादिवोस्तोक के महत्व को समझते हुए भारत ने यहां पर एक कौंसुलावास खोलने का निर्णय लिया था। वर्ष 2017 में एक ओर हम भारत और रूस के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 70वीं वर्षगांठ मना रहे हैं, वहीं दूसरी ओर इस वर्ष में हम व्लादिवोस्तोक में भारतीय कौंसलावास की स्थापना की भी 25वीं वर्षगांठ भी मना रहे हैं।

सम्माननीय अतिथिगण,

भारत और रूस के बीच दीर्घकालिक मैत्री समय की कसौटी पर खरी उतरी है।

और यह हमारी ''विशिष्ट एवं विशेष रणनीतिक भागीदारी'' में भी परिलक्षित होती है। प्रधान मंत्री मोदी की रूस यात्रा और महामहिम राष्ट्रपति पुतिन की भारत यात्रा जैसी उच्च स्तरीय यात्राओं के उपरांत हमारे द्विपक्षीय संबंधों में अनेक नए आयाम जुड़े हैं और राजनीतिक, सुरक्षा, व्यवसाय एवं वाणिज्य, रक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और संस्कृति जैसे लगभग सभी क्षेत्रों में लगातार बढ़ता हुआ सहयोग दिखाई देता है।

प्रधान मंत्री मोदी इस वर्ष जून में सेंट पीर्ट्सबर्ग अंतरराष्ट्रीय आर्थिक मंच में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे और भारत अतिथि राष्ट्र के रूप में शामिल हुआ था। भारत को दिए गए इस सम्मान के लिए हम आपके आभारी हैं। रूस के सुदूरपूर्व के विकास में एक भागीदार के रूप में भारत को आमंत्रित करने के लिए भी मैं रूसी सरकार, विशेषकर महामहिम श्री यूरी ट्रूटनेव के प्रति आभार प्रकट करती हूँ। आज की मेरी यह यात्रा रूस के साथ हमारे सहयोग को और प्रगाढ़ बनाने की हमारी सरकार की दृढ़ इच्छा को दर्शाती है। दो दिन पहले चीन में आयोजित ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के अवसर पर हमारे प्रधान मंत्री तथा राष्ट्रपति पुतिन के बीच हुई मुलाकात के दौरान भी इस बात को दोहराया गया था।

भाइयों और बहनों,

एशिया प्रशांत क्षेत्र, विश्व में विकास के इंजन के समान है, और यह सर्वाधिक सक्रिय क्षेत्रों में से एक माना जाता है। सबसे तेजी से विकसित होती अर्थव्यवस्था के रूप में भारत इस क्षेत्र में स्थित अन्य देशों के साथ घनिष्ठ कारोबारी एवं आर्थिक संबंध स्थापित करने के लिए और शांतिपूर्ण तथा स्थिर क्षेत्रीय ढांचा विकसित करने के लिए सक्रिय भागीदारी करता है। रूसी सुदूरपूर्व क्षेत्र के लिए हमारी नीति, भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीति का ही एक और हिस्सा है।

एक्ट ईस्ट नीति हमारी समग्र विदेश एवं व्यापार नीति का एक मुख्य आधार स्तंभ है और पिछले तीन वर्षों के दौरान इसमें उल्लेखनीय प्रगति हुई है।

भारत एशिया प्रशांत क्षेत्र में रूस की बढ़ती हुई भूमिका के लिए और यूरेशियाई भू–क्षेत्र के चहुंमुखी विकास के लिए उसके द्वारा की गई पहलों का स्वागत करता है।

हमें खुशी है कि इस मंच की बैठक के दौरान विशेष तौर पर एक भारत–रूस कारोबारी वार्ता आयोजित की जाएगी और मुझे उम्मीद है कि इससे एक–दूसरे के बारे में जानकारी बढ़ेगी और सहयोग वाले क्षेत्रों का पता लग पाएगा। आज भारतीय कंपनियां विदेशों में निवेश कर रही हैं और उन्होंने विश्व स्तरीय क्षमताएं विकसित की हैं। 30 मिलियन आबादी वाला एक विशाल भारतीय डायस्पोरा विश्व भर में धन और यश कमा रहा है और भारत स्वयं भी एक विशाल बाजार है।

भारत और रूस दोनों के उद्यमी संयुक्त उद्यम लगा सकते हैं और आपूर्ति एवं उत्पादन श्रृंखला विकसित कर सकते हैं, जिससे एक–दूसरे के देश में रोजगार का सृजन होगा तथा खुशहाली आएगी।

हमें विश्वास है कि रूसी सुदूरपूर्व और भारत के बीच एक–दूसरे के प्रति सम्मान की भावना है। भारत इस क्षेत्र के विकास में सतत भागीदार रहा है। भारत सखालिन तेल क्षेत्र में सबसे बड़ा निवेशक है और सुदूरपूर्व रूस का यह क्षेत्र भारत को बिना तराशे हीरे की आपूर्ति करने वाला सबसे बड़ा स्त्रोत है।

अब तक के हमारे अनुभव से हम इस क्षेत्र के भविष्य के बारे में आशावान हैं। भारत भी सुदूरपूर्व रूस के विकास एवं आधुनिकीकरण के लिए अब तक किए गए अलग–अलग उपायों में गहरी रुचि ले रहा है। हमें उम्मीद है कि भारतीय कंपनियां इस क्षेत्र में विशेष तौर पर कोयला खनन, कृषि, अनुबंधित खेतीबाड़ी, मछलीपालन, फार्मास्यूटिकल, स्वास्थ्य, लकड़ी उत्पादन, बहुमूल्य धातु, बंदरगाह संपर्क तथा पर्यटन जैसे क्षेत्रों में अधिक से अधिक संभावनाएं तलाशेंगी।

सुदूरपूर्व रूस और भारत के बीच सहयोग के कारण वर्ष 2025 तक 30 बिलियन अमरीकी डॉलर के कारोबारी लक्ष्य को हासिल करने में भी उल्लेखनीय योगदान मिल सकता है। पिछले माह हमारे देश की कंपनियों ने भारत में एक कंपनी का अधिग्रहण करने के लिए 12.9 बिलियन डॉलर का एक सौदा किया है। यह रूस की ओर से भारत में किया गया सबसे बड़ा निवेश और भारत में एकमात्र सबसे बड़ा विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) है।

मैं सुदूरपूर्व रूस के प्रतिनिधिमंडलों को भी आमंत्रित करती हूँ कि वे भारत में आकर रोड शो आयोजित करें और भारत तथा सुदूरपूर्व की क्षमताओं और दोनों देशों की सरकारों द्वारा दी जा रही कानूनी सहायता एवं सुविधाओं को भी प्रदर्शित करें। मैं इस मंच से यह घोषणा करना चाहूंगी कि रूसी कंपनियों की सहायता के लिए हम राष्ट्रीय निवेश एजेंसी, इन्वेस्ट इंडिया में एक विशिष्ट 'रूसी डेस्क' की शुरुआत करेंगे। मुझे उम्मीद है कि इस प्रकार के उपायों से हमारे संबंधों को और प्रगाढ़ बनाने में मदद मिलेगी।

मैं रूस को शुभकामनाएं देना चाहूंगी कि उनके प्रयासों से इस क्षेत्र में और अधिक समृद्धि आए और इस क्षेत्र का तेजी से विकास हो। भारत इस प्रयास में सदा एक सक्रिय भागीदार बना रहेगा। आपने मुझे आमंत्रित किया, इसके लिए मैं पुनः धन्यवाद देती हूँ और इस मंच की अपार सफलता के लिए ढेरों शुभकामनाएं देती हूँ।

***